Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. V, Issue IX, January-2013, ISSN 2230-7540

REVIEW ARTICLE

उपन्यासकार शिवानी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. V, Issue IX, January-2013, ISSN 2230-7540

उपन्यासकार शिवानी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

Seema Narwal

Assistant Professor in Hindi, Gaur College of Education, Hisar

----------X----------

व्यक्तित्व का अर्थ :

व्यक्तित्व का अर्थ हिन्दी में प्रायः अंग्रेजी शब्द 'पर्सनैलिटी' का पर्याय बनकर प्रयुक्त होता है। 'पर्सनैलिटी' शब्द की व्युत्पति लैटिन के पर्सोना से मानी जाती है। ग्रीक नाट्यगृह का एक ग्रीक अभिनेता प्रायः एक मुखावरण चेहरे पर लगाये रखता था। इस मुखौटे को पर्सोना कहते थे, क्योंकि वह उसी में से बात करता था और संभवतः यहीं से इस 'पर्सोना' शब्द का प्रयोग हर व्यक्ति विशेष के लिए होने लगा।

धीरे–धीरे 'पर्सोना शब्द की व्यक्तित्व का पर्याय माना गया। व्यक्तित्व का तात्पर्य किसी व्यक्ति के उस रूप से है जैसा वह दूसरों को प्रतीत होता है और उसका अंतः और बाह्म दोनों रूप स्पष्ट हो जाता है।

व्यक्तित्व का मूल्यांकन व्यक्तित्व के विभिन्न पक्षों के आधार पर किया जाता है – शारीरिक पक्ष, बौद्धिक पक्ष, चारित्रिक पक्ष, भावात्मक पक्ष इन चारों पक्षों का सबल समावेश शिवानी के व्यक्तित्व में मिलता है।

शिवानी का व्यक्तित्व :

एक प्रबल व्यक्तिधारी शिवानी के बारे में कहा जा सकता है कि लेखक तीन प्रकार के होते हैं – एक वे जिनका कृतित्व महान होता है, किन्तु व्यक्तित्व गौण, दूसरे वे जिनका व्यक्तित्व महान होता है, किन्तु कृतित्व गौण होता है। तीसरे वे जिनका व्यक्तित्व भी महान होता है और कृतित्व भी। शिवानी की गणना तीसरे प्रकार के कृतिकारों में की जाती है।

हिन्दी की अधुनातन उपन्यास लेखिकाओं में शिवानी अग्रगण्य है। वे एक अत्यंत सुरूचि सम्पन्न एवं सहृदय लेखिका है। अपने उपन्यासों के कथ्य एवं शिल्पगत वैशिष्टय के कारण वे अभिजात्य वर्ग के पाठकों में विशेष लोकप्रिय रही। उनके उपन्यासों में शरदचंद्रीय भावुकता और प्रेमचन्द्रीय यथार्थवादिता का गंगाजमुनी समन्वय प्रबुद्ध पाठकों को एक साथ समुपलब्ध हो जाता है। इस सहृदय लेखिका का जीवन लोगों को प्रेरणादायी रहा।

जीवन–परिचय

श्रीमती गौरा पंत 'शिवानी' स्वातंत्रयोत्तर आधुनिकतावादी उपन्यास लेखिकाओं में शिवानी जी अग्रगण्य है।

जीवन–परिचय शीर्षक के अंतर्गत हम उनका जन्म–स्थान, जीवन, बचपन, शिक्षा, गृहस्थ जीवन तथा उनके पारिवारिक परिचय का अध्ययन करेंगें।

उपन्यासकार शिवानी का बहुआयामी व्यक्तित्व

स्वातंत्रयोत्तर आधुनिकतावादी उपन्यास लेखिकाओं में शिवानी सिरमौर रहीं, जिनकी रचनाएँ उनकी विनम्रता एवं स्वाभिमान के कारण अधिक निखर उठी हैं। जीवन के हर कदम पर शिवानी जी विनम्र रही। विनम्रता के साथ–साथ स्वाभिमानी भी थी। जीवन के कठिनाईपूर्ण क्षणों में भी स्वाभिमान से रहना उन्होंने सीखा है और अपने उपन्यास के पात्रों को भी सिखाया है। उनका शालीन और संस्कारवान व्यक्तित्व का गहरा प्रभाव पाठकों पर पड़ता है। आज विनम्र होना, शालीन होना तथा अच्छा आदमी होना, शायद हास्यास्पद माना जाने लगा है। अपने लिखे की येन–केन प्रकारेण चर्चा सुनाना लेखकों का लक्ष्य बन गया है। ऐसे वातावरण में 'अच्छे' लेखक 'अच्छे आदमी' से मिलकर बड़ी खुशी प्राप्त होती है। शिवानी जी का होना ऐसे ही एक अच्छे लेखक के अच्छे इन्सान का होना था।

शिवानी का रचना संसार

शिवानी जी नवीं–दसवीं कक्षा में थी तभी 'विश्वभारती' पत्रिका में लिखने लगी थीं। ग्यारह वर्ष की उम्र में पहली कहानी 'सिन्दूरी' लिखी थी जो बंगला पत्रिका नटखट में छपी थी। सन् 1951 ई. में उनकी पहली हिन्दी कहानी 'जमीन्दार की मृत्यु' धर्मयुग में प्रकाशित हुई थी।

शिवानी जी का पहला हिन्दी–उपन्यास 'मायापुरी' है जो सन् 1961 में प्रकाशित हुआ। इन्होंने आरम्भ में कविताओं की भी रचना की थी, जो संख्या की दृष्टि से बहुत अल्प है, इनकी प्रथम कविता सन् 1939 ई. में 'विश्ववाणी' कलकत्ता में 'गौरा–पाण्डे' के नाम से प्रकाशित हुई थी। शिवानी जी लेखन के साथ–साथ पढ़ती भी बहुत थी। प्रेमचन्द, टैगोर, गोर्की, आदि तथा मन्नू भण्डारी, मंजुलभगत तथा इस्मत चुगताई भी उन्हें प्रिय रहे।

उपन्यासकार शिवानी के उपन्यासों का परिचायात्मक अध्ययन :

'मायापुरी' सन् 1961 ई. में सरस्ती बिहार, दिल्ली से प्रकाशित शिवानी जी का बहुचर्चित एवं महत्वपूर्ण सामाजिक उपन्यास है। इस उपन्यास में शोभा नाम की नारी की सम्पूर्ण झाँकी प्रस्तुत की गई है। उसकी जीवन–कथा के साथ उसके जीवन–मर्म की, तात्विक और दार्शनिक निष्कर्षों की झलक दी गई है जिससे रचना में बौद्धिकता का समावेश हो गया है। सम्पूर्ण कथा पढ़ जाने पर हमारे मन एवं मस्तिष्क एकाग्र हो उठते हैं, और हम उपन्यास में चित्रित समस्या पर विचार करने पर बाध्य हो जाते हैं।

www.ignited.in

कथा–नायिका शोभा मध्यवित् परिवार की लड़की है जो अपने पिता देदीदत्त के देहावसान के पश्चात् अपनी माँ दुर्गा के साथ अनेपैतृक गाँव में रहने चली जाती है। शोभा एक महत्वाकांक्षी लड़की है। बाद में वह अपनी माँ की सहेली गोदावरी के पास रहकर क्रमशः स्कूली शिक्षा प्राप्त करती है। वहाँ वह गोदावरी मौसी के पुत्र सतीश के प्रेमजाल में फंस जाती है। इधर सतीश की माँ शोभा को चाहते हुए भी सतीश को विवाह भारत के राजदूत तिवारी जी की पुत्री सविता से इसलिए करना चाहती है, कि तिवारी जी अपने धन और छल–बल से सतीश को डॉक्टरी पढ़ने विदेश भेज देंगे। सतीश सविता से विवाह करने के लिए राजी हो जाता है, तो तिवारी जी उसके पिता के सारे कर्ज चुका देते हैं और सतीश को डॉक्टरी पढ़ने के लिए विदेश भेज देते हैं लेकिन विदेश से वापस लौटने पर वह सविता के बेडौल शरीर को देखकर खिन्न हो जाता है और पुनः शोभा की ओर आकृष्ट हो जाता है। शोभा किसी तरह वहाँ से भागकर अपने घर पहुँची जाती है। संयोगवश विवाहोपरान्त सतीश की मुलाकात शोभा से नैनीताल में होती है। पुनः दोनों के प्रेम का आदान–प्रदान होता है और दुःखद स्थिति में वे एक–दूसरे से विदा लेते हैं। पर विदेश जाते समय वायुयान दुर्घटना में सतीश की मृत्यु हो जाती है। सतीश की मृत्यु का समाचार सुनकर उसकी पत्नि सविता नहीं आती है, वह अपने पिता के सेक्रेटरी के साथ रंगरेलियाँ मनाती रहती है। सतीश की मृत्यु का समाचार सुनकर शोभा उसे देखने आती है और सतीश के मृत शरीर पर गिरकर बेहोश हो जाती है। यही उपन्यास की मुख्य कथावस्तु है।

सतीश का विवाह शोभा से न होकर सविता से होना मात्र आर्थिक विषमता को स्पष्ट करता है। 'मायापुरी' आधुनिक समाज की आर्थिक विषमताओं एवं उच्चवर्गीय परिवार की खोखली जिन्दगी का पर्दाफाश करने वाला एक सशक्त उपन्यास है।

सहायक ग्रन्थ सूची

1. भारतीय काव्य शास्त्र, डॉ. माया अग्रवाल अशोक प्रिन्टर्स, दिल्ली,

2. मनोवैज्ञानिक चिंतन, ललजीराम शुक्ल, नन्दकिशोर एण्ड सन्स, वाराणसी

3. मन्नू भंडारी की कहानियों में आधुनिकता बोध, उमा केवलराम चन्द्रलोक प्रकाशन, कानपुर

4. मन्नू भंडारी का कथा साहित्य, प्रो. किशोर गिरड़कर विश्वभारती, प्रकाशन, नागपुर

5. महासमरोत्तर हिन्दी उपन्यासों में जीवन दर्शन, कलावती प्रकाश श्याम प्रकाशन, जयपुर

6. मुक्तिबोध रचनावाली भाग–5 नेमिचन्द जैन, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

7. वर्तमान हिन्दी महिला कथा, लेखन और दाम्पत्य जीवन साधना अग्रवाल वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

8. विचार प्रवाह, डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी

9. विचार और वितर्क, डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी साहित्य, भवन, इलाहाबाद